''सूखता हुआ तालाब'' में प्रदर्शित राजीतिक जीवन–मूल्य

निशा सिंह रघुवंशी, सहायक प्राध्यापक, (हिन्दी) कॅरियर कॉलेज, भोपाल

शोध सार

''सूखता हुआ तालाब '' में लेखक ने राजनीतिक जीवन मूल्यों एवं उनके अवमूल्यन को प्रकट किया है इस उपन्यास में कहीं–कहीं राजनीतिक जीवन मूल्यों को उकेरा गया हैं तो कहीं–कहीं पर राजनीतिक अवमूल्यन की ओर लेखक ने ध्यान आकृष्ट किया है। स्वतंत्रता के पश्चात सभी के अंदर व्यक्तिगत स्वार्थ की भावना बढ़ गयी और वे व्यक्तिगत स्वार्थ के लिये, राजनीति करने लगे समाज में फैले यौन संबंध, राजनीति को भी दूषित कर रहे है। राजनीतिक स्वार्थ के लिये कुछ लोगों को उनके अनैतिक कृत्यों की नैतिक मान्यता प्राप्त है तो कुछ लोगों को उसके लिये सजा दी जा रही है।

शामदेव, शिवलाल, धर्मेन्द्र और दयाल जैसे लोग अपने राजनीतिक स्वार्थों के लिये किसी भी हद तक जाने को तैयार है इनमें न तो सामाजिक मूल्य बचे है और न ही राजनीतिक मूल्य । उनकी कलुषित राजनीतिक गतिविधियों के कारण देव प्रकाश जैसे सभ्य और सज्जन व्यक्ति का समाज में बहिष्कार कर दिया जाता है वे एक सच्चा और नैतिक मूल्यों युक्त सार्थक जीवन जीने के लिये, शहर के नैतिक अवमूल्यन के कारण वे गांव आये थे लेकिन यहाँ आकर देखा तो यहाँ की परिस्थितियाँ और भी विक्रान्त है गांव में नैतिक मूल्यों का पतन हो चला है गांव के लोग पहले जहाँ सच्चाई, ईमानदारी और इज्जत के लिये जीते थे वे अब अपने निजी स्वार्थ के लिये सम्पूर्ण नैतिकताओं को दरकिनार कर रहे है। लेखक ने उपन्यास में देवप्रकाश के माध्यम से अभिव्यक्त किया है , देव प्रकाश सरोज से कहते है– ''तुम नहीं जानते सरोज, अभी, शहर से नये–नये आये हो न । यहाँ गांव की जिन्दगी कितनी खराब हो गई है, लोग मुझसे जलते है। मैं किसी कमीने को खलियाता नहीं हूँ। जब से मैं नौकरी छोड़ कर आया , ये सब अपने षडयंत्र में मुझे भागीदार बनाना चाहते है। मैं यह सब नहीं करता। अपनी ईमानदारी के लिए सबसे जूझता रहता हूँ । ''[1]

देव प्रकाश के भाई अवतार का नाजायाज संबंध एक पासिन स्त्री से है। इसी का फायदा उठाते हुये गांव में चतुर चालाक व्यक्ति धर्मेन्द्र, शामदेव और शिवलाल उस पर व्याभिचार का आरोप लगाकर उसे और देव प्रकाश दोनों को समाज से बहिष्कृत कर देते है। ऐसा नहीं है कि इससे पहले गांव का कोई भी व्यक्ति व्याभिचार में न फंसा हो लेकिन इसे इस प्रकार से समाज से बहिष्कृत नहीं किया गया, अवतार के इस अपराध में देव प्रकाश को कोई दोष नहीं है , फिर भी देव प्रकाश का सामाजिक बहिष्कार कर दिया गया है। इसका मुख्य कारण यही है कि देव प्रकाश सच्चे और ईमानदार व्यक्ति है उनके कारण गांव के लोग अपनी बेईमानी और बदमाशियों में सफल नहीं हो पा रहे हैं इसलिये उन्हें इस तरह बहिष्कृत कर अपना रास्ता साफ करना चाहते है। इसे व्यक्त करने के लिये लेखक ने डॉ. सरोज के माध्यम से लिखा है– ''मैं मानता हूँ कि इसी गांव में अनेक लोग पहले भी पकड़े गये होंगे । आशनाई में,

लेकिन लोगों ने इन्हें हँसकर, गाली देकर छोड़ दिया होगा या पट्टीदारों ने इस घटना को पचा लिया होगा। अब यह सब राजनीति का ही प्रताप है।'' [2]

मार्क्सवाद जो कि समाजवाद का ही दूसरा नाम है। स्वतंत्रता से पूर्व मार्क्सवादी नेता समाज में एकरूपता एवं समानता स्थापित करने का दम भरते थे। वे भी अब निजी स्वार्थों में लिप्त हो गये है। उनकी कथनी और करनी में बहुत अंतर हो गया है। मोतीलाल हरिजनों के प्रतिनिधि नेता है, भाषण में जहाँ वो हरिजनों का अधिकार और समानता की बातें करते हैं लेकिन यथार्थ में वे उनके शोषण को दरकिनार कर उन्हें ही दोषी ठहराने लगते है। जब गांव में मोतीलाल के हलवाले घुरपतरी के बेटे मुरतिया को शिवलाल का बेटा रामलाल चाँटा मार देता है तो मोतीलाल रामलाल का विरोध करने के बजाय उसी का पक्ष करते हुये कहते है– ''अरे जाने दीजिए, थप्पड़ खा गया तो कौन साला मर गया। अब चमार सियार के लिए पट्टीदार से लड़ाई करने जाऊँ, जब गांव के लोग छूत–छात मानते है तो थोड़ा ठहरकर ही पानी भरता मुरतिया, उसे इतनी जल्दी क्या थी ? बात यह है कि इन सालों का भी काम में मन नहीं लगता , जल्दी जल्दी काम करके तार भाठ करना चाहते हैं।''[3]

मोतीलाल एक तरफ तो सामाजिक समानता के लिये राजनीति कर रहे है दूसरी तरफ स्वयं ही सामाजिक समानता में पक्षपात कर रहे है। घरपति का बेटा मुरतिया नाद भरने के लिए कुएं पर चढ़ जाता है पानी भरना उसका सामाजिक अधिकार है फिर भी रामलाल का बेटा उसे चाँटा मार देता है और मोतीलाल हरिजनों के नेता होते हुये भी मुरतिया के सामाजिक समानता के अधिकार का पक्ष न लेते हुये उसे ही दोषी ठहराते है।

समाजवादी नेता मोतीलाल देश और समाज में समानता के लिये राजनीति करते हैं वे केवल निजी स्वार्थ के लिये समाजवाद की बात करते हैं न तो उनके व्यवहार में नैतिकता है और न ही मन में नैतिकता के भाव । उनका शारीरिक संबंध अपने भाई की विधवा पत्नी से है। यहाँ लेखक ने मोतीलाल के नैतिक मूल्यों के पतन को अभिव्यक्त करते हुये लिखा है कि अपने भाई की मृत्यु के बाद वे उसकी पत्नी के साथ अनैतिक संबंध स्थापित कर लेते है लेकिन जब यह बात गांव वालों को पता चलती है तो वह सामाजिक बहिष्कार के डर से प्रायश्चित करने तैयार हो जाता है रविन्द्र कहता है ''यह भी तय हुआ है यह जाकर गंगा नहायेगा और बेटे के निकासन के समय सत्यनारायण की कथा सुनेगा और रातोंरात कोई ओझा आयेगा और पेट भडुवा शांत करेगा।'' [4]

लेखक उपर्युक्त प्रसंगों के माध्यम से राजनीतिक अवमूल्यन और राजनीतिक स्वार्थ लिप्सा को भी अभिव्यक्त करना चाहता है। मोतीलाल के व्याभिचारी होने पर उसे प्रायश्चित की स्वतत्रंता दी जाती है, जबकि देव प्रकाश के भाई के व्याभिचारी होने पर देवप्रकाश को भी समाज से बहिष्कृत कर दिया जाता है।

राजनीतिक जीवन में आये अवमूल्यन के कारण लोग हिजड़ा स्वरूप हो गये है जिनका अपना कोई वजूद नहीं है। स्वतंत्रता पश्चात् जिस राज्य की कल्पना उसके साकार होने में कोसों मील की दूरी तय करनी थी। ऐसा नहीं था कि हर जगह राजनीतिक अवमूल्य हो चुका

था या हर जगह की राजनीतिक कलुषित, कलंकित और निंदनीय थी लेकिन अधिकांश स्थानों पर कुछ लोगों के राजनीतिक अवमूल्यन की सजा अन्य ईमानदार और मूल्यवान व्यक्तियों को भुगतनी पड़ रही थी। गांव के जीवन में आये राजनीतिक अवमूल्यन और राजनीतिक विकृति को देखते हुये शंकर देव प्रकाश से कहता है '' स्वराज के बाद इसी गांव की कल्पना की थी नेताओं ने ।''[5] इस पर देवप्रकाश कहता है ''यह देन भी तो इन्हीं की है'' अर्थात् स्वतंत्रता पूर्व जिन नेताओं ने एक अच्छे राज्य की कल्पना की थी, स्वतंत्रता पश्चात् वे नेता स्वयं ही भ्रष्ट हो गये।

संदर्भग्रंथ :

1. सूखता हुआ तालाब, रामदरस मिश्र, रचनावली खण्ड–6 पृष्ठ–06
2. उपरिवत – पृष्ठ– 07
3. उपरिवत – पृष्ठ– 14
4. उपरिवत – पृष्ठ– 34
5. उपरिवत – पृष्ठ– 49